International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017, pp. 405~413
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939

आज और हिन्द स्वराज

डॉ0 ब्रजेश कुमार त्रिपाठी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर राजनीति विभाग

हीरा0रा0दी0जी0 कालेज

सन्त कबीरनगर

इक्कीसवीं शताब्दी ज्ञान की शताब्दी है। तकनीक, ज्ञान एवं सूचना का विस्फोट इस समय का अन्यतम् वैशिष्ट्य है। डिजिटलाइजेशन के युग में तकनीक का परिवर्तनकारी स्वरूप दानवी हो चुका है। क्षण–प्रतिक्षण वह अपने रूप, आयाम एवं उपयोगिता में परिवर्तनशील है। सूचना का अन्तःप्रवाह हमारे मस्तिष्क की विश्लेषण की आजादी, चिन्तन का अवसर देने को तैयार नहीं है। हम तकनीक एवं सूचना रूपी दैत्यों की जबरदस्ती सूचना को ही 'ज्ञान' मान बैठे हैं और उसी के अनुरूप बरत् भी रहे हैं। इस बरतने का संकट यह है कि मानव जाति एक भटकाव का शिकार बन गयी है। इण्डिया टुडे कान्क्लेव–2017 में बोलते हुए पी को अय्यर ने कहा कि इस सत्र में हमारी मुलाकात के दौरान दुनिया भर के इंसान पूरी अमेरिकी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में मौजूद सूचनाओं से 12 गुना ज्यादा सूचनाएँ इकट्ठा करते हैं। जितनी जानकारियाँ सेक्सपियर को पूरी जिन्दगी में मिली, इस कमरे में मौजूद आपमें से हरेक शख्स को मिल रही है। लिहाजा आप शेक्सपियर से ज्यादा जानते है, पर क्या आप ज्यादा अक्लमंद भी हैं ? यह मैं पक्के तौर पर नहीं कह सकता। इतना जरूर है कि आप मौजूदा वक्त के साथ जितना चलने की कोशिश करते हैं उतना ही पिछड़ते जाते हैं (इण्डिया टुडे), इस शताब्दी का दर्शन, साहित्य एवं समाज सब संकट ग्रस्त है, बोझिल है, दिशाहीन है। फ्रांसिस फूकायोयामा की पुस्तक 'दी इण्ड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्टमैन' और सैमुयल पी0 हरिंग्टन की पुस्तक द क्लैश ऑफ सिविलाईजेशन एण्ड द न्यू वर्ल्ड आर्डर बीसवीं शताब्दी के अन्त में प्रकाशित पुस्तकें मानव समाज के सार्वाधिक संकट ग्रस्त होने का बौद्धिक उद्घोष हैं। इतिहास का अन्त एवं अन्तिम व्यक्ति का चित्र यह स्पष्ट घोषणा करता है कि मानव का 'मनन' स्वरूप समाप्त हो चुका है। इसलिये वह अब इतिहास बनाने के काबिल ही नहीं है, उसकी काबिलियत इस भूमण्डलीकरण के युग में 'अनवरत्

उपभोक्ता' बनने की रह गयी है।' असन्तुष्ट सुकरात पुनः संतुष्ट सुअर' बनने को दिशा में अग्रसर हो रहा है। हटिंग्टन की सभ्यताओं के संघर्ष की उक्ति में प्रयुक्त सभ्यता शब्द के स्थान पर भौतिक आवश्यकताओं से पागल मनुष्यों के बीच संघर्ष के रूप ज्यादा देखा जाना चाहिए क्योंकि सभ्यता का आयाम केवल ढाँचागत ही नहीं अपितु यह एक मानसिक, सांस्कृतिक एवं मूल्यपरक अवधारणा भी है। संघर्ष की जमीन वहाँ तैयार होती है जहाँ सभ्यता समाप्त होती है, असभ्यता एवं पशुता स्थान प्राप्त करती है।

आज हम भूमण्डलीकरण के युग में जी रहे है। भूमण्डलीकरण का अर्थ है पूँजी का अबाध प्रवाह, मुक्त व्यापार, अर्थ व्यवस्था में खुलापन एवं वैश्विक दृष्टिकोण, उदारीकरण, प्राइवेटाइजेशन और ग्लोबलाईजेशन (LP.G.) के फलस्वरूप विकसित एवं विकासशील देशों में भौतिकवादी विकास की अवधारणा के प्रति जनआकांक्षाओं का व्यापक एवं तीव्र उभार हुआ है। विज्ञापन एवं संचार की दुनिया में विकास के मानक परिवर्तित हुए हैं। धन, विलासिता, वैभव का एकत्रीकरण, मानव का मूल लक्ष्य हो गया है। किन्तु इसको विश्व की लगभग 6 अरब की आबादी के बीच समान रूप से वितरित करने का न्यायपूर्ण मकैनिज्म नहीं विकसित हो पाया है। लिहाजा इस वैश्वीकरण की पृष्ठभूमि में आतंकवाद, व्यापक असमानता, गरीबी, अशिक्षा, बीमारियाँ एवं पर्यावरण का संकट तेजी से उत्पन्न हुआ है। भूमण्डलीकरण के युग में राष्ट्रवाद का पुनरूत्थान, अधिनायकवादी प्रवृत्तियों का उदय, तकनीक का व्यापक मानवीय मूल्यों से स्वतंत्र विकास आज की वैज्ञानिक भौतिकवादी दुनिया की स्पष्ट सीमाएँ बनकर उभर रही हैं। भारत में भी 1991 के बाद भूमण्डलीकरण के प्रभाव में देश की आर्थिक नीति में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। तब तक देश के आर्थिक विकास का जिम्मा राज्य यानी सरकार का था। 1991 से बाजार पर बहुत सारे निर्णय छोड़ दिये गये हैं। बाजार के अर्थशास्त्र को मानने वाले कट्टर बाजारवादियों का तो अभी भी मानना है कि सरकार ने बाजार पर अभी बहुत सारे प्रतिबन्ध आयत किये हुए है। इसलिये आशिंक वृद्धि दर की उच्चतम चोटी पर नहीं पहुँच पा रहे है। बावजूद इसके पिछले चार–पाँच सालों से अर्थतंत्र के कुल सकल उत्पादन में हो रही सालाना आठ प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि को देख फूले नहीं समा रहे है और अब मंजिल दूर नहीं का नारा बुलन्द हो चला है। (प्रो0 एस0के0 आयंगर पृष्ठ–2) वास्तविकता यह है कि भूमण्डलीकरण के युग में ढाँचागत हिंसा के उपकरण ज्यादा तीखे और पैने हुए है। राबर्ट गिलमेन का मनना है कि भूख और गरीबी ढाँचागत हिंसा की सबसे

बड़ी अभिव्यक्ति भी है तथा कारण भी। भूख और गरीबी शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक हिंसा के कारण भी है। राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था पद्धतियों की वजह से भूख और गरीबी पनपती है और बढ़ती है।

सवाल है इस मानव सभ्यता के सम्मुख उपलब्ध विकल्पों का जो इस मानवता को पुषपित, पल्लवित एवं संरक्षित करने का बेहतर संदेश दे सकें। मार्क्स ने स्वयं पूँजीवादी दर्शन की सराहना इस रूप में थी कि यांत्रिक सभ्यता के तीव्र विकास ने मानव जीवन को सुखी बनाया है। उससे पूर्व उसका जीवन अवश्य कष्टप्रद था। (सी0एल0 वेपर राजदर्शन का स्वाध्याय)। लेकिन मार्क्स की चुनौती यह थी कि यह सुख समाज के एक छोटे वर्ग तक ही सीमित है। इसमें वितरण प्रणाली दोष पूर्ण है। लेकिन मार्क्स ने इस दोषपूर्ण प्रणाली से छुटकारे का जो मार्ग सुझाया वह क्रांति (हिंसात्मक परिवर्तन) का था। उनका ऐसा मानना था कि पूँजीपति वर्ग को क्रूरता के खिलाफ सर्वहारा की व्यापक क्रूरता ही इस व्यवस्था की शोषण मूलक पद्धति को समाप्त कर सकती है। दोनों दर्शन अपने व्यवहारिक रूप में लागू हो चुके है तथा इनकी सम्भावनाओं के साथ–साथ सीमाएँ भी स्पष्ट हो चुकी है। गाँधी मार्ग का अभी प्रयोग बाकी है और सम्भवतः यह दर्शन ही मानवता की रक्षा का दर्शन हो सकता है।

ऐसे में 21वीं शताब्दी के आरम्भ में ही लगभग 107 वर्ष पूर्व महात्मा गांधी द्वारा 1909 में रचित पुस्तक 'हिन्द स्वराज' की चर्चा तीसरी पुस्तक के रूप में बहुतायत हुई। मानवता के एक वैकल्पिक दर्शन की खोज में यह पुस्तक आशा की किरण बनी। आज मानव एवं मानवता का संकट अधिक धनीभूत है। साधारण नागरिक अपना सारा समय अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के कठिन प्रयत्नों में अथवा उन प्रयत्नों की न्तिाओं में बिता देता है। व्यक्ति अपने जीवन के न्यूनतम साधनों को जुटाने और दिन–प्रतिदिन के आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयत्नों में इतना अधिक व्यस्त रहता है कि उसे अपने भीतर देखने अथवा अपने जीवन को एक ऊँचे नैतिक और सांस्कृतिक स्तर तक उठाने का बिल्कुल समय ही नहीं मिल रहा है। व्यक्ति का अन्य व्यक्ति से सम्पर्क कारखाने में, दुकान पर या भीड़ में अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते–जाते, अथवा किसी आन्दोलन में भाग लेते हुए। परन्तु उसके और समाज के बीच की दूरी निरन्तर बढ़ती जा रही है और वह प्रतिदिन अलगाव एवं सत्रांस की भावना से ग्रस्त होता जा रहा है। जैसा कि मार्क्स कहता है वह अपने को अपने समाज,

राज्य तथा उन लोगों के जिनके साथ काम करता है और यहाँ कि कि स्वयं से भी विच्छिन्न पाता है। आज के प्रमुख चिन्तक राबर्ट निस्वत ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि ''यदि पुनर्जागरण युग के विचारों में हमें विवेकशीलता का भाव प्रमुख रूप से मिलता है, यदि अठारहवीं शताब्दी में मनुष्य के प्रकृति प्रदत्त स्वभाव को प्रधानता दी गयी, और उन्नीसवीं शताब्दी में आर्थिक अथवा राजनैतिक मनुष्य की श्रेष्ठता को महत्व दिया गया तो यह बिल्कुल सम्भव है कि हमारे युग के सम्बन्ध में आने वाले इतिहासकारों की यह मान्यता होगी कि बीसवीं शताब्दी की प्रमुख समस्या समाज से विच्छिन्न अथवा असम्बद्ध व्यक्ति की है (SP Verma, Page-315) । आगे यह भी कहा जा सकता है कि 21वीं सदी के मनुष्य का सामाजिक एवं आध्यात्मिक आयाम विलुप्तप्राय ही है।

ऐसे समय में इस विश्व के समक्ष गाँधी की विचारधारा के रूप में एक ऐसा प्रयोजनमूलक दर्शन है, जिस दिशा में विश्व विकल्प रूप में अपने को बढ़ा सकता है। विचार, क्रिया एवं प्रभाव का समन्वय गाँधीवाद की तरह अन्य विचारधाराओं में बहुत कम पाया जाता है यद्यपि गाँधी ने लिखा है कि गाँधीवाद जैसी कोई चीज नहीं है और न ही मुझे अपने पीछे साम्प्रदाय छोड़कर जाता है किन्तु 1931 के कराची अधिवेशन में गाँधी ने कहा कि गाँधी मर सकता है, लेकिन गाँधीवाद नहीं। गाँधी का सिद्धान्त अथवा दर्शन मानव मुक्ति का दर्शन है उसमें यथा स्थान व्यवहारिक परिवर्तन असंगतियाँ विषमताएँ, स्वयं का विरोध इत्यादि अवश्य है लेकिन मानव मुक्ति के पथ–प्रदर्शक के रूप में उन्होंने अपने चिन्तन से समझौता कभी नहीं किया। अंग्रेजी की मासिक पत्रिका 'आर्यन पाथ' के सितम्बर 1938 में प्रकट हुए 'हिन्द स्वराज' के लिये भेजे गये सन्देश में उन्होंने स्वयं कहा कि ''जिन सिद्धान्तों के समर्थन के लिये हिन्द स्वराज लिखा गया था उन सिद्धान्तों को आप जाहिरात करना चाहती है। यह मुझे अच्छा लगता है। मूल पुस्तक गुजराती में लिखी गयी थी, अंग्रेजी आवृत्ति गुजराती का तर्जुमा है। यह पुस्तक अगर आज मुझे फिर से लिखनी हो तो कहीं–कहीं मैं उसकी भाषा बदलूँगा। लेकिन इसे लिखने के बाद जो तीस साल मैंने आंधियों में बिताए है उनमें मुझे इस पुस्तक में बताए हुए विचारों में हेरफेर करने का कुछ भी कारण नहीं मिला (अमृत लाल ठाकोरदास)

गांधी ने हिन्द स्वराज की रचना लिवरपूल से डरबन जाते हुए जहाज की यात्रा में लिखी उसमें उन्होंने अपने उन विचारों का संकलन किया जो उनके मन–मस्तिष्क

को आलोड़ित कर रहे थे। 1921 में दिये गये भाषण में गांधी ने बताया था कि उन्होंने हिन्द स्वराज क्यों लिखी : प्रथमतः: गाँधी अपने उन मित्रों को यह उत्तर देना चाहते थे जो भारतीय लंदन में रहकर अग्रेंजों के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त थे। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि हिंसा का रास्ता हिन्दुस्तान की आजादी का रास्ता नहीं है। आजादी, अहिंसा, सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा पर टिकी हुई है। दूसरा गाँधी की इस किताब का मिशन वैचारिक एवं राजनैतिक था। वैचारिक रूप से उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता सम्बन्धी विचारों की आलोचना की एवं राजनैतिक रूप से भारत के भविष्य की रूप रेखा खींचने की कोशिश की। गाँधी की स्वराज की अवधारणा स्थूल रूप से तिलक एवं ऐनीबेसेन्ट के होमरूल की अवधारणा से उद्भूत थी, और वे भी डोमिनियन स्टेट्स के पक्षकार थे, लेकिन गाँधी के स्वराज का रचनात्मक पहलू उस अवधारणा को अद्भूत स्वरूप अवश्य प्रदान करता है।

हिन्द स्वराज कुल 20 अध्यायों में विभक्त है और लगभग उसमें 30 हजार शब्द हैं। यह पुस्तक संवाद शैली में लिखी गयी है। यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने अपनी न्याय धारणा की स्थापना हेतु 'रिपब्लिक' की रचना संवाद शैली में की थी। महाभारत के युद्ध में गीता के रूप में कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया सन्देश भी संवाद शैली में है। गाँधी गीता के अत्यधिक प्रभाव में भी थे। यंग इण्डिया के 6 अगस्त 1925 के अंक में गाँधी ने लिखा था, ''जब शंकाए घेर लेती है, जब निराशायें मेरे सामने आकर खड़ी हो जाती है और मुझे आशा की एक भी किरण नहीं दिखाई देती है तब मैं भगवद्गीता का आश्रय लेता हूँ और चित्त को शांति देने वाला श्लोक पा जाता हूँ और अत्यधिक विषाद के बीच मुस्कुराने लगता हूँ। ''यद्यपि गाँधी ने हिन्द स्वराज की परिशिष्ट 2 में कुछ प्रमाणभूत ग्रन्थों का उल्लेख इस रूप में किया है कि हिन्द स्वराज के अध्ययन को आगे बढ़ाने में यह पुस्तकें उपयोगी साबित होंगी। इन 20 पुस्तकों की सूची का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि गाँधी अपने समय तथा पूर्ववर्ती विचारों से कितने आप्लावित थे इस सूची में जिन दो भारतीय लेखकों की पुस्तकों का जिक्र है वे ही इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया आर0सी0 दत्त एवं पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया–दादा भाई नैरोजी। शेष 6 पुस्तकें टालस्टाय रचित है। दो–दो पुस्तकं थोरो एवं रस्किन की है। गाँधी ने टालस्टाय की पुस्तक :दि किंगडम ऑफ

गॉड इज विदिन यू' से ईसाई धर्म की मान्यताएँ, क्रिश्चियन इथिकिस एवं अहिंसा के सिद्धान्तों से परिचित होने का अवसर प्राप्त किया।

टालस्टाय ने 25 अप्रैल 1910 को यास्नाया पोलपाना से पत्र भेजा जिसमें उन्होंने लिखा 'मुझे आपका पत्र एवं आपकी पुस्तक इण्डियन होम रूल अभी मिले। जिन बातों और प्रश्नों की आपने अपनी पुस्तक में विवेचना की है उनके कारण मैंने उन्हें बहुत दिलचस्पी से पढ़ा। निष्क्रिय प्रतिरोध केवल भारत के लिये ही नहीं, बल्कि सारी मानवता के लिए सर्वाधिक महत्व का प्रश्न है।' (लूई फिशर पृष्ठ–34)। गाँधी ने 25 मार्च 1909 को अपने पुत्र मणिलाल के नाम एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने लिखा मगन लाल भाई से कहना मैं उन्हें इमर्सन के निबन्ध पढ़ने की सलाह देता हूँ ये निबन्ध अध्ययन करने योग्य है। मेरे विचार से इन निबन्धों में एक पश्चिमी गुरु द्वारा भारतीय अनुभव–ज्ञान की शिक्षा है। कभी–कभी अपनी खुद की वस्तु को इस प्रकार भिन्न साँचे में ढला देकर कौतुहल होता है। (लूई फिशर, पृष्ठ 32) आर0डब्ल्यू0 इमर्सन अमेरिकी थे व 19वीं शताब्दी में अमेरिका में दासता के खिलाफ खड़े थे। उन्होंने 'सेल्फ रिलायंस' नामक निबन्ध में व्यक्ति के आत्मा एवं अस्तित्व को महत्वपूर्ण स्वीकार करते हुए राज्य सत्ता का प्रतिरोध किया। वह मानते थे कि मनुष्य का आत्मबल एवं आत्म मार्गदर्शन ही श्रेष्ठ मार्ग है वह मनुष्य पर किसी भी प्रकार के बन्धनों के विरोधी थे गाँधी इमर्सन की इस धारणा के अत्यन्त करीब है और हिन्द स्वराज में वह इस आत्मबल को श्रेष्ठतर केन्द्र बिन्दु के रूप में स्वीकारते है। विवेकानन्द ने अपनी पुस्तक 'कर्मयोग' में लिखा कि दुनिया के सभी महापुरुष धुरंधर कर्मी थे उनका विश्वास था कि भयंकर कर्म द्वारा मुक्ति का मार्ग पाया जा सकता है वह आवश्यक बातें अध्ययन से सीखने के हिमायती नहीं है। 'गाँधी ने लिखा मैंने इमर्सन, मैजिनी की रचनाएँ पढ़ी है। मैंने उपषिद् पढ़ लिए है। सब इस मत को पुष्ट करते है कि शिक्षा का अर्थ अक्षर ज्ञान नहीं बल्कि चरित्र निर्माण है। इसका अर्थ है कर्तव्य ज्ञान और अमर यह मत सही है और मेरे विचार से केवल सही मत यही है। गाँधी ने अपनी जीवनी में यह स्वीकार किया है कि मेरी बहुत अध्ययनशील होने की प्रवृत्ति कभी भी नहीं रही है लेकिन जितना पढ़ा उससे प्रभावित होने पर जीवन में चरितार्थ जरूर किया। युवा गाँधी ने इंग्लैण्ड में शाकाहार आधारित किताबें पढ़ने के पश्चात् शाकाहार का प्रचार–प्रसार करने वाले संगठनों की सदस्यता ग्रहण करी। जॉन रस्किन की पुस्तक अंटू दिस लास्ट को उन्होंने एक रेल यात्रा के दौरान पढ़ा और उसे

पढ़कर वह इतने प्रभावित हुए की एक फार्म हाऊस की स्थापना की जिसमें ''सर्वोदय'' की अवधारणा के अनुरूप आश्रम की व्यवस्था की गयी। गाँधी ने यहाँ रहकर जीवन में श्रम का महत्व स्थापित करने की कोशिश की जो कि पाश्चात्य सभ्यता के मशीनीकरण के युग में सिरे से गायब होती जा रही थी। गाँधी ने अपनी आत्मकथा में स्वयं स्वीकारा कि जिसे सत्यमार्ग पर चलना हो उसे ''सुर्वण मार्ग'' सहज भाव से मिल जाता है। उसे शास्त्र नहीं खोजने पड़ते।

दरअसल 'हिन्द स्वराज' गाँधी का आत्मप्रकाश है जो बीसवीं सदी में प्रसरित अंधकार में पथप्रदर्शक है। बीसवीं शताब्दी विश्व युद्ध रूपी भयंकर हिंसा की आहट गाँधी जैसे शुद्ध आत्मा ने अवश्य अनुमान कर ली होगी जिससे उन्होंने हिन्द स्वराज में निष्क्रिय प्रतिरोध का सिद्धान्त मानवता के लिये आवश्यक बताते हुए दिया। गाँधी पश्चिम की सभ्यता के सभी रोगों को एक कुशल वैद्य की भाँति पश्चिम प्रवास रूपी नाड़ी पर हाथ रखकर पहचान लिया था। गाँधी ने इस सभ्यता के आत्मविरोधों को सजगता से स्पष्ट किया। उन्होंने माना कि पूँजीवाद या बाजार पर आधारित सभ्यता प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने वाली है जबकि मानव का मूल स्वभाव सहयोग परक है। प्रतिस्पर्धा हिंसा की ओर ले जाती है जो मानव नहीं अपितु पशुता का चिन्ह है। दूसरे गाँधी की यह प्रबल धारणा थी कि यांत्रिकता का अति विस्तार मानव हित में नहीं है। मनुष्य का स्थायी हित उसकी प्राकृतिक शक्तियों के प्रयोग एवं विस्तार में है। वे यह भी स्वीकार करते है कि पाश्चात्य सभ्यता का पूँजीवादी उपकरण मनुष्य को एक उपभोगवादी के रूप में समझकर उसके आत्म–अस्तित्व की अनदेखी करता है तथा पूँजीवाद का प्रभाव ही उपनिवेशवाद है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य पर की जाने वाली घोर हिंसा का प्रमाण है। अतः वे अंग्रेजों के विरोधी न होकर उसे व्यवस्था के विरोधी थे जो मनुष्य को शासक एवं शासित की औपनिवेशिक दासता में बाँधती है। गाँधी का स्पष्ट मानना था कि इस व्यवस्था को विकल्प रूप में स्वतंत्र भारत में अपनाने पर भारतीय शासक भी अंग्रेजों की औपनिवेशिक मानसिकता का ही अनुसरण करेंगे। इसलिये उन्होंने राज्य केन्द्रित व्यवस्था के स्थान पर समुदाय संचलित ग्राम स्वराज की अवधारणा के हिमायती थे।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. डिजिटलाइजेशन डिजिटल तकनीक का एकात्म स्वरूप है जिसमें सभी वस्तुओं का डिजटिलीकरण हो जो करने योग्य हो। यह विकास एवं आत्मनिर्भर समाज की पारदर्शिता का विचार है।

2. इण्डिया टुडे, 5 अप्रैल, 2017

3. फ्रांसिस फूकोयामा ने द इण्ड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्ट मैन 1992 की कति में इतिहास के अन्त की व्याख्या के क्रम में यह रेखांकित किया कि विचारधारात्मक संघर्ष खत्म हो चुका है। मौजूदा युग सारी दुनिया में उदार जनतंत्र का है शीत युद्ध समाप्त हो चुका है। अपने आगे के चिन्तन में उन्होंने स्वयं इस विचार को चुनौती दी जिसमें आवर पोस्ट ह्यूमन फ्यूचर : कान्सीकवेन्सेज ऑफ वायो टेक्नोलाजी रिवोल्यूशन 2002 एवं स्टेट बिल्डिंग : गर्वनेन्स एण्ड द वल्ड आर्डर इन ट्वन्टीफर्स्ट सेंचुरी 2004 पुस्तकें प्रमुख है।

4. सैमुअल पी हरिगटन की पुस्तक द क्लेश ऑफ सिविलाईजेशन इस मान्यता पर आधारित है कि आने वाले समय में मनुष्यों के बीच संघर्ष उनकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान के आधार होगी।

5. जेरेमी वेथम

6. जान स्टूअर्ट मिल

7. ढाँचागत हिंसा (Structural Violenece) शब्द का प्रयोग सबसे पहले जाने माने विद्वान एवं कर्मयोगी जोहान गाल्तुंग ने 1960 के दशक थे अन्तिम वर्षों में किया। वे तमाम सामाजिक ढाँचे जो आर्थिक, राजनीतिक कानूनी एवं धार्मिक तथा सांस्कृतिक मूल के है की वजह से व्यक्ति, समूह या समाज अपनी पूरी क्षमता के साथ विकसित नहीं हो पाता और कुंठित रहते है। ढाँचागत हिंसा कहना चाहिए।

8. सी0एल0 वेपर : राजदर्शन का स्वाध्याय

9. एस0पी0 वर्मा : आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त विकास पब्लिशिंग हाउस 1997

10. मोहन दास करम चन्द गांधी : हिन्द स्वराज : अनुवादक : अमृत लाल ठाकोर दास नानावटी स्वर्ण सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 2013

11. लूईफिशर : गांधी की कहानी : अनुवाद : चन्द्र ग्रुप्त वार्ष्णो : सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, 2009

12. मोहनदास करम चन्द्र गांधी : सत्य के प्रयोग : अनुवाद काशीनाथ त्रिवेदी : नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद 1957

अवध प्रसाद संवादक : हिन्द स्वराज की प्रासंगिकता सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।